अभ्यास प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे] [पूर्णांक : 90

खंड-क

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाला विकल्प चुनकर लिखिए :**

हमारे देश में जातिवाद सबसे जटिल समस्या है। यह समस्या स्वस्थ राष्ट्रीयता के पनपने में बहुत बड़ा बाधक तत्व है। कहना कठिन है कि जाति-प्रथा देश में कब जन्मी। इतिहासकार यह मानते हैं कि जब आर्य भारतवर्ष में आए, उस समय उनका सम्मिलन यहाँ के देशवासियों से हुआ। इस तरह प्रारंभ में दो ही सांस्कृतिक समूह थे— आर्य और अनार्य। यह भेद जाति का और संस्कृति का था। जो केवल आर्यों और अनार्यों तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु धीरे-धीरे आर्यों में भी भेद होने लगा और चार जातियों का प्रादुर्भाव हुआ। यह जाति-व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी, न कि जन्म पर। कालांतर में जाति-प्रथा जन्म और वंश से संबंधित हो गई। हमारे संविधान के निर्माता यह जानते थे कि जाति-प्रथा और लोकतंत्र एक साथ नहीं रह सकते हैं। उन्होंने संविधान में इस तरह के नियम बनाए, जिनके द्वारा किसी भी नागरिक के विरुद्ध जाति के आधार पर भेद-भाव या पक्षपात न हो सके। यह स्थिति दुखद है कि जातिवाद के अनुसार सभी जातियों के व्यवसाय पूर्व निर्धारित होते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था सामाजिक न्याय के विपरीत है। जो भी राष्ट्र का हित चाहते हैं, वे जातिवाद का डटकर मुकाबला करें और उसके उन्मूलन में सहयोग दें।

(क) भारत में जाति-प्रथा का उद्भव कब से माना जाता है?

(*i*) भारत के मूल निवासियों के उद्भव से (*ii*) भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व
(*iii*) भारत के मूल निवासियों पर आर्यों की विजय के बाद (*iv*) भारत में बसे आर्यों में भिन्नता पैदा होने के बाद

(ख) जाति-व्यवस्था का परिणाम नहीं है :

(*i*) स्पृश्यता-अस्पृश्यता का भाव (*ii*) ऊँच-नीच का भेद-भाव
(*iii*) पिछड़े वर्ग के व्यक्ति की योग्यता को नकारना (*iv*) जातिगत पक्षपात न होने देना

(ग) जाति-प्रथा का उन्मूलन क्यों आवश्यक है?

(*i*) सामाजिक भेदभाव की समाप्ति के लिए (*ii*) मनचाहा व्यवसाय करने के लिए
(*iii*) आर्थिक संपन्नता के लिए (*iv*) राष्ट्रवाद को जन्म देने के लिए

(घ) अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक होगा :

(*i*) भारत में जाति-प्रथा (*ii*) आर्य-अनार्य संस्कृति (*iii*) जातिवाद की समस्या (*iv*) सामाजिक भेद-भाव

(ङ) 'समस्या' शब्द की व्याकरणिक कोटि है :

(*i*) व्यक्तिवाचक संज्ञा (*ii*) जातिवाचक संज्ञा (*iii*) भाववाचक संज्ञा (*iv*) द्रव्यवाचक संज्ञा

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाला विकल्प चुनकर लिखिए :**

कई लोग असाधारण अवसर की बाट जोहा करते हैं। साधारण अवसर उनकी दृष्टि में उपयोगी नहीं रहते। परंतु वास्तव में कोई अवसर छोटा-बड़ा नहीं है। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसी में भिड़ा देने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है। सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं, जो अवसरों की बाट देखते रहते हैं, अपितु वे हैं, जो अवसर को अपना दास बना लेते हैं। हमारे सामने हमेशा ही अवसर उपस्थित होते रहते हैं। यदि हम में इच्छा-शक्ति है, काम करने की ताकत है, तब तो हम स्वयं ही उनसे लाभ उठा सकते हैं। अवसर न मिलने की शिकायत कमज़ोर मनुष्य ही करते हैं। जीवन अवसरों की एक धारा है। स्कूल, कॉलेज का प्रत्येक पाठ, परीक्षा का समय, कठिनाई का प्रत्येक पल, सदुपदेश का प्रत्येक क्षण एक अवसर है। इन अवसरों

से हम नम्र हो सकते हैं, ईमानदार हो सकते हैं, मित्र बना सकते हैं, उत्तरदायित्वों का मूल्य समझ सकते हैं और इस प्रकार उच्च मनुष्यता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं, जो अवसर को पकड़कर करोड़पति हो गए। परंतु अवसरों का क्षेत्र यहाँ समाप्त नहीं हो जाता। अवसर का उपयोग करके हम इंजीनियर, डॉक्टर, कला-विशारद, कवि और विद्वान भी बन सकते हैं। यद्यपि अवसरों के उपयोग से धन कमाना अच्छा काम है, परंतु धन से भी कहीं श्रेष्ठ कार्य सामने हैं। धन ही जीवन के प्रयत्नों का अंत नहीं है, जीवन के लक्ष्य की चरम सीमा नहीं है। अवसरों के सदुपयोग से हम सर्वदृष्टि से महत्वपूर्ण इंसान नहीं बन सकते हैं।

(क) छोटा अवसर भी कब बड़ा और असाधारण हो जाता है?

(*i*) जब हम में उससे लाभ उठाने की क्षमता हो।
(*ii*) जब हम बड़े अवसर की प्रतीक्षा में उसकी उपेक्षा नहीं करते।
(*iii*) जब आलस्य के कारण उसके उपयोग से वंचित नहीं होते।
(*iv*) जब हम पूरी लगन से उसका भरपूर उपयोग करते हैं।

(ख) अवसर का लाभ कैसे उठाया जा सकता है?

(*i*) अवसर की राह देखने से
(*ii*) अनेक अवसरों में उपयोगी अवसर की पहचान से
(*iii*) कार्य करने की उत्कट लालसा एवं शक्ति के भरपूर उपयोग से
(*iv*) कठिनाइयों को सहन करने से

(ग) जीवन को अवसरों की एक धारा क्यों कहा है?

(*i*) धारा जीवन को विनाश की ओर बहा सकती है।
(*ii*) जीवन की ज़िम्मेदारियों का बोध करा सकती है।
(*iii*) जीवन में प्रत्येक क्षण अवसर प्राप्त होते रहते हैं।
(*iv*) धारा जीवन में अच्छे मित्र दे सकती है।

(घ) कौन-सा श्रेष्ठ कार्य है जो धन से भी बढ़कर है?

(*i*) इंजीनियर या डॉक्टर बनना
(*ii*) श्रेष्ठ कवि या कलाकार की ख्याति प्राप्त करना
(*iii*) खेलों में दक्षता हासिल करना
(*iv*) समाज में महान् एवं आदर्श व्यक्ति बनना

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है :

(*i*) अवसर और मनुष्य
(*ii*) जीवन : अवसरों की एक धारा
(*iii*) जीवन में अवसरों का महत्व
(*iv*) अवसर और इच्छाशक्ति

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?
मैं कठिन तूफ़ान कितने झेल आया,
मैं रुदन के पास हँस-हँस खेल आया।
मृत्यु-सागर-तीर पर पद-चिह्न रखकर—
मैं अमरता का नया संदेश लाया।
आज तू किसको डराना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?
शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं
हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।
तेज़ मेरी चाल आँधी क्या करेगी?
आग में मेरे मनोरथ तप चुके हैं।
आज तू किससे लिपटना चाहती है?
चाहता हूँ मैं कि नभ-थल को हिला दूँ,
और रस की धार सब जग को पिला दूँ,
चाहता हूँ पग प्रलय-गति से मिलाकर—
आह की आवाज़ पर मैं आग रख दूँ।
आज तू किसको जलाना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?

(क) कवि निराशा को ललकारते हुए अपने बारे में बता रहा है कि :

(*i*) वह परेशानियों से पराजित हुआ है।
(*ii*) वह तूफ़ानों से डरा है।
(*iii*) उसको दुखों ने रुलाया है।
(*iv*) वह अमरता का संदेश लेकर आया है।

(ख) निराशा किसे डराना चाहती है?

(i) साहसी कवि को (ii) मननशील पाठक को (iii) जुझारू वीरों को (iv) निराश व्यक्ति को

(ग) कवि क्या चाहता है?

(i) विश्व में प्रलय (ii) इच्छाओं की पूर्ति (iii) संसार में क्रांति (iv) असीमित अधिकार

(घ) कविता का मुख्य संदेश है :

(i) वीरता (ii) अमरता (iii) क्रांतिकारिता (iv) आशावादिता

(ङ) 'मृत्युसागर' में अलंकार है :

(i) श्लेष (ii) उत्प्रेक्षा (iii) रूपक (iv) उपमा

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

जिस धरती को तुमने सींचा
अपने खून-पसीने से,
हार गई दुश्मन की गोली
वज्र तुम्हारे सीनों से
जब-जब उठी तुम्हारी बाँहें, होता वश में काल है।
जिस धरती के लिए सदा
तुमने सब कुछ कुर्बान किया
शूली पर चढ़-चढ़ हँस-हँसकर
कालकूट का पान किया
जब-जब तुमने कदम बढ़ाया, हुई दिशाएँ लाल हैं।

उस धरती को टुकड़े-टुकड़े
करना चाह रहे दुश्मन
बड़े गौर से अजब तुम्हारी
चुप्पी थाह रहे दुश्मन
जाति-पाँति वर्गों-फ़िरकों के, वह फैलाता जाल है।
कुछ देशों की लोलुप नज़रें
लगीं तुम्हारी ओर हैं,
कुछ अपने ही जयचंदों के
मन में बैठा चोर है।
सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है।

(क) 'धरती को खून-पसीने से सींचने' का अभिप्राय है–

(i) देश के खेतों को जल से सींचना। (ii) देश के लिए कठिन से कठिन परिश्रम करना।
(iii) देश की सुरक्षा के लिए रात-दिन सावधान रहना। (iv) देश की रक्षा हेतु शत्रु पर गोलियाँ चलाना।

(ख) काल वश में हो सकता है जब–

(i) दुश्मन गोलियाँ न चलाए। (ii) हम रक्षा के लिए बाँहें उठाएँ।
(iii) हम हँस-हँसकर कुर्बानी दें। (iv) जाति-पाँति का भेद न रहे।

(ग) 'जाति-पाँति' में अलंकार है–

(i) यमक (ii) श्लेष
(iii) अनुप्रास (iv) उपमा

(घ) 'हुई दिशाएँ लाल हैं।' का तात्पर्य है–

(i) देश के कोने-कोने में क्रांति होना। (ii) अन्याय का विरोध होना।
(iii) रूढ़िवाद की समाप्ति होना। (iv) जन-जागृति फैलाना।

(ङ) 'सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है।' पंक्ति में 'कपटी खाल पहने' किसे कहा गया है?

(i) जो बेईमान है। (ii) जो देशप्रेम का दिखावा करता है।
(iii) जो विश्वासघाती है। (iv) जो अपनी कायरता को छिपाता है।

खंड-ख

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–

(क) चारों ओर जंगल से घिरे एक बहुत बड़े गाँव में आदिवासियों के परिवार रहते थे। (वाक्य-भेद लिखिए)

(ख) कुनबे की उस सराय में बिस्मिल्ला के पाँच बेटों, तीन बेटियों और संगतकार साज़िंदों के भरे-पूरे परिवार रहते थे। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) यह वही भारत है जो सोने की चिड़िया कहलाता था। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए–

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। (कर्मवाच्य में)

(ख) हम जा नहीं सकेंगे। (भाववाच्य में)

(ग) सुरेश द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा। (कर्तृवाच्य में)

(घ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। (कर्मवाच्य में)

7. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए–

मैं घर लौटी तो पिताजी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं, अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबा लाल जी बैठे थे।

8. (क) काव्यांश पढ़कर उसमें निहित रस पहचानकर लिखो–

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार ॥

(ख) भयानक रस का स्थायी भाव क्या है?

(ग) जुगुप्सा किस रस का स्थायी भाव है?

(घ) वात्सल्य रस का उदाहरण लिखिए।

खंड-ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ यदि पढ़ाने ही का परिणाम है तो पुरुषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा ही का परिणाम समझना चाहिए। बम के गोले फेंकना, नरहत्या करना, डाके डालना, चोरियाँ करना, घूस लेना– ये सब यदि पढ़ने-लिखने ही का परिणाम हो तो सारे कॉलिज, स्कूल और पाठशालाएँ बंद हो जानी चाहिए। परंतु विक्षिप्तों, बात व्यथितों और ग्रह ग्रस्तों के सिवा ऐसी दलीलें पेश करने वाले बहुत ही कम मिलेंगे। शकुंतला ने दुष्यंत को कटु वाक्य कहकर कौन-सी अस्वाभाविकता दिखाई?

(क) द्विवेदी जी ने सभी स्कूल-कॉलेज़ बंद करने की बात क्यों कही है?

(ख) स्त्री-शिक्षा का विरोध करने वालों को क्या कहा गया है?

(ग) शकुंतला के किन वचनों में द्विवेदी जी को स्वाभाविकता नज़र आती है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

(क) महानगरीय जीवन असुरक्षित क्यों हैं? 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर बताइए।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के आधार पर लिखिए कि संगीत सीखने के लिए किन बातों का होना आवश्यक है?

(ग) स्त्रियों की अशिक्षा समाज की उन्नति में बाधक हैं– क्यों? 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) 'संस्कृति' पाठ में लेखक के अनुसार मानव संस्कृति के जन्मदाता कौन हैं?

(ङ) लेखिका मन्नू भंडारी पिता के किस रास्ते पर चलने को टकराहट भरा मानती हैं?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥
खरकुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे ॥
नत येहि काटि कुठार कठोरे । गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे ॥

(क) विश्वामित्र ने किससे क्या कहा और क्यों?

(ख) परशुराम ने लक्ष्मण को छोड़ देने का क्या कारण बताया?

(ग) परशुराम गुरु के ऋण से थोड़े में ही उऋण होने का स्वप्न किस रूप में देखते हैं?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

(क) 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

(ख) आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं, जलने के लिए नहीं'–इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है?

(ग) संगतकार कविता का उद्देश्य लिखिए।

(घ) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर बताइए कि लक्ष्मण के अनुसार परशुराम द्वारा धनुष तथा कुठार धारण करना व्यर्थ क्यों है?

(ङ) 'मृगतृष्णा' किसे कहा गया है? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किन अर्थ में हुआ है?

***13. जलाए जाने वाले विदेशी वस्त्रों के ढेर में अधिकांश वस्त्र फटे-पुराने थे परंतु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बनी कोरी साड़ियों का फेंका जाना उसके कौन-से जीवन-मूल्यों को दर्शाता है?**

खंड-घ

14. किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए–

(क) यदि मैं विद्यालय का प्रधानाचार्य होता–

संकेत बिंदु– • छात्रों में शिक्षा और विज्ञान का प्रचार-प्रसार • शिक्षा का उन्नत स्तर • छात्रों में साहित्य-प्रेम • छात्रों को अच्छा चिकित्सक और मानव बनने की प्रेरणा देना • अनुशासन • उपसंहार।

(ख) काल्पनिक/वास्तविक विमान यात्रा–

संकेत बिंदु– • हवाई यात्रा का अवसर • मन में अपार उत्साह • हवाई यात्रा की तैयारियाँ • मन में खुशी व भय • उपसंहार।

(ग) सब दिन होत न एक समाना–

संकेत बिंदु– • परिवर्तन ही जीवन • जीवन में उतार-चढ़ाव • इतिहास का एक अन्य प्रसंग • प्रकृति परिवर्तन का दूसरा रूप • उपसंहार।

15. भारतीय वायुसेना में 'पायलट' के पद के लिए आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा में असफल मित्र को ढाढ़स बँधाते हुए पुनः प्रयास के लिए एक प्रेरणा-पत्र लिखिए।

*मूल्यापरित प्रश्न

अथवा

नगर-निगम द्वारा संचालित पुस्तकालय के प्रबंधक को पत्र लिखकर पुस्तकालय में नई पत्रिकाओं की व्यवस्था के लिए अनुरोध कीजिए।

16. **निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए–**

मानव अकृतज्ञ प्राणी नहीं है। वह उपकारों का प्रतिदान चुकाना भली प्रकार से जानता है। फिर प्रकृति के तो मानव-जीवन पर अनंत उपकार हैं। वह अनादिकाल से अपने विविध भंडारों के द्वार खोलकर मानव के लिए लुटाती आ रही है। आज तो एक ममतामयी माँ के समान उसने अपने ज्ञानी-विज्ञानी पुत्रों की स्थूल रूप अधीनता भी स्वीकार कर ली है फिर भी उसके भंडार और रहस्य अनंत बने हुए हैं। मानव की सारी शक्तियाँ भी उसकी गहराई को नाप पाने में असमर्थ ही प्रमाणित हो रही हैं। आरंभ से ही मानव इस तथ्य से भली-भाँति परिचित रहा है कि वह चाह और प्रयास करके भी प्रकृति की गहराई की थाह पाने में समर्थ नहीं हो सकता। इसी कारण वह अनादिकाल से ही प्रकृति माँ के चरणों में अपनी काव्यमय श्रद्धांजलियाँ अर्पित करता आ रहा है। एक निखरा हुआ सत्य यह भी है कि संसार की समस्त प्राचीन भाषाओं ने अपने काव्य-विषय समग्रतः प्रकृति से ही चुने हैं। संसार की प्राचीनतम भाषा संस्कृत में प्रकृति के अनंत रूपों के सभी प्रकार के अनंत वर्णन मिलते हैं। आदि कवि वाल्मीकि से लेकर और उससे पहले भी वैदिक ऋचाओं के कवियों से लेकर आज तक के संस्कृत कवियों ने प्रकृति के सुरम्य वर्णनों से अपने काव्यों के कलेवर को सजाया सँवारा है।